जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

हिण्डौन सिटी

Rashtradoot

फोनः- 230200, 230400 फैक्सः- 07469-230600 वर्षः 15 संख्याः 223 प्रभात हिण्डौन सिटी, बुधवार 14 जून, 2023 पो. रजि.SWM-RJ-6069/2017-18 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

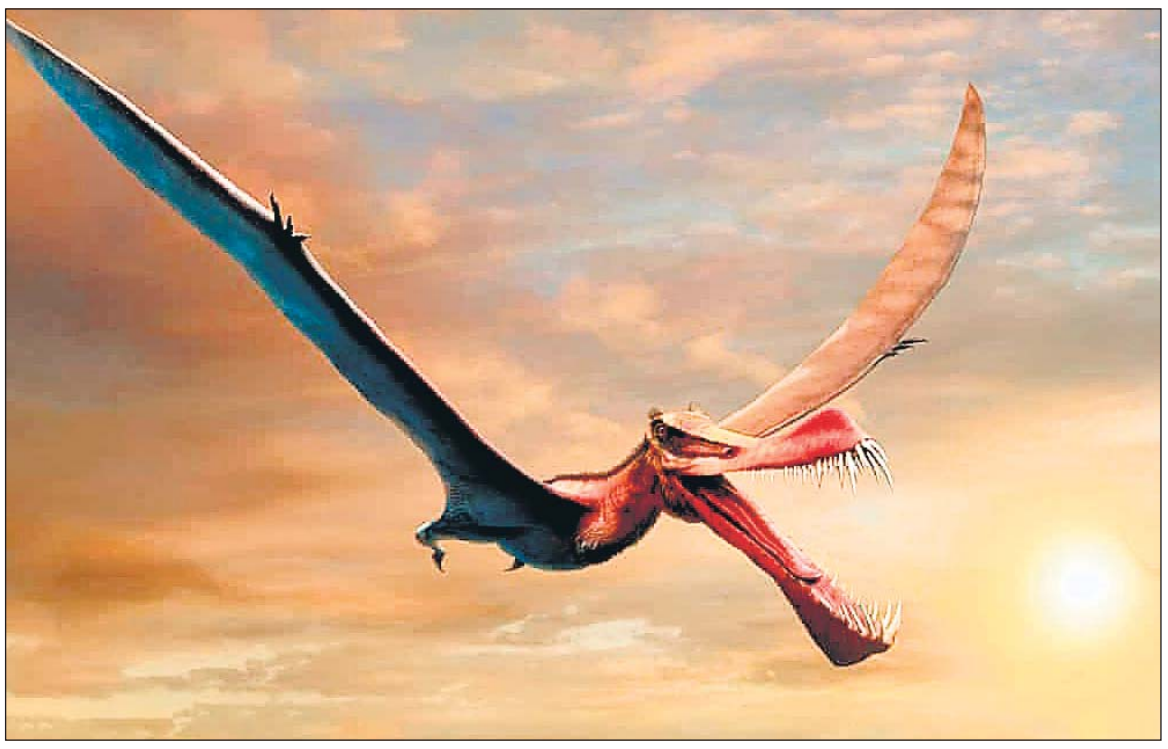

एक दुर्लभ जीवाश्म से टैरसॉर की नई प्रजाति का पता चला है, जिसके पंखों का फैलाव 23 फुट तक था। इसकी खोपड़ी तीन फुट लम्बी थी और स्नाउट (थूथन) नुकीला था और मुँह में 40 तीखे दांत थे। एक कलाकार ने अपनी कल्पना के आधार पर इसकी (ऊपर दी गई) तस्वीर बनाई है। जर्नल ऑफ द वर्टिब्रेट पेलिअनटॉलजिस्ट में छपे एक नए शोध के अनुसार लगभग 105 मिलियन साल पहले आस्ट्रेलिया में पंखों वाला एक विशाल रैप्टाइल (सरीसृप) मिलता था। यह जीव, लुप्त हो चुके फ्लाइंग रैप्टाइल्स के समूह, जिन्हें टैरसॉर्स कहते थे, का नवीनतम सदस्य था और ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप का सबसे बड़ा फ्लाइंग रैप्टाइल था। युनिवर्सिटी ऑफ क्वीन्सलैंड के शोध छात्र व सहायक शोध लेखक टिम रिचर्ड्स ने एक वक्तव्य में कहा कि, यह जीव यह बहुत भयावह दिखता था, बिल्कुल ड्रैगन जैसा। संभवतः यह एरोमांगा इनलैण्ड सी के पास रहता था और मछलियों का शिकार करता था। हालांकि इस जीव का जीवाश्म नॉर्थवेस्ट क्वीन्सलैंड के पास दस साल पहले मिला था, पर, शोधकर्ता यह साबित नहीं कर पाए थे कि, यह एक नई प्रजाति है। टैरसॉर की 200 प्रजातियां हैं, जिसमें 16 फुट लम्बे जीव से लेकर गौरैया के आकार के जीव शामिल हैं। टैरसॉर ना केवल उड़ सकते थे बल्कि तैरने में भी माहिर थे। युनिवर्सिटी ऑफ क्वीन्सलैंड की टीम को इस जीव के आकार व विशिष्टता का पता इसके जबड़े के विश्लेषण से लगा है। उन्होंने इसे ''तापुन्गाका शाय'' नाम दिया है। यह शब्द ऑस्ट्रेलिया के मूल निवासियों के एक ग्रुप, वानामारा नेशन की अब लुप्त हो चुकी भाषा का है। शोध लेखक स्टीव सैलिसबरी ने बताया कि, तापुन और गाका का अर्थ है, क्रमशः भाला और मुंह। सैलिसबरी, जो यूनिवर्सिटी ऑफ क्वीन्सलैंड में जीवाश्म वैज्ञानिक हैं, ने बताया कि, क्योंकि, इस जीव की हड्डियां हल्की और भुरभुरी होती हैं, इसलिए ऑस्ट्रेलिया व विश्व में कहीं भी इनके जीवाश्म मिलना काफी बड़ी चुनौती है। परिणाम स्वरुप, पेलिअन्टॉलजिस्ट्स के लिए इनका जीवन रहस्यपूर्ण बना हुआ है। गत माह ही यू.के. की एक रिसर्च टीम को पता लगा कि, इन जीवों के बच्चे, अण्डे से निकलने के कुछ ही समय के अंदर उड़ सकते थे। इनके जीवाश्म की खोज से सबसे खास बात यह पता चली है कि, इनके ऊपरी व निचले जबड़े पर ''हड्डी के शिखर '' जैसी संरचना थी।

'अभी जल्दी क्या है'

राजस्थान में कांग्रेस पार्टी की आंखें 24, अकबर रोड, स्थित ए.आई.सी.सी. मुख्यालय पर टिकी हैं

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 13 जून। सभी की निगाहें नई दिल्ली पर हैं, क्योंकि राजस्थान को इंतजार है कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और पूर्व उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट के बीच क्या समझौता हुआ है तथा समझौते के नियम व शर्तें क्या हैं।

लेकिन ज़मीनी स्तर पर कोई सक्रियता नहीं दिख रही है। दिल्ली में 24, अकबर रोड़ पर स्थित कांग्रेस का मुख्यालय सुनसान पड़ा है, सभी कमरे खाली पड़े हैं, वहां कोई नहीं है।

माना जाता है कि राहुल गांधी जो अभी लंदन में हैं, की वापसी तक कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय नहीं होगा। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे कर्नाटक में हैं।

एक अनुभवी वरिष्ठ पत्रकार ने कहा कि ''अभी जल्दी क्या है।'' राजस्थान कांग्रेस समाधान का इंतजार कर रही है पर नेतृत्व खुली आंखों से सो रहा है।

इसी प्रकार खड़गे एक कामचलाऊ अध्यक्ष की तरह काम कर रहे हैं उनके पास ना तो कोई सचिवालय है ना ही उन्होंने अभी तक कोई पदाधिकारी ही नियुक्त किया हैं। वे अपनी टीम बनाने में असमर्थ हैं। वे क्या चाहते हैं और गांधी परिवार क्या चाहता है इस पर कोई आपसी समझ नहीं है।

इसी बीच वरिष्ठ नेताओं ने प्रमुख पद पाने के लिए लॉबिइंग करना शुरु कर दिया है। सुरजेवाला ए.आई.सी.सी. के महासचिव (संगठन) बनना चाहते हैं वहीं के.सी. वेणुगोपाल, जो मौजूदा ए.आई.सी.सी.सी. महासचिव (संगठन) हैं, अपने पद पर बने रहने के लिए हर हमले का मुकाबला कर रहे हैं। उन्हें राहुल गांधी का पूर्ण समर्थन प्राप्त है।

खड़गे प्रमुख पदों पर अपने लोगों को लाना चाहते हैं पर वे जानते हैं कि गांधी परिवार के समर्थन के बिना वे ऐसा नहीं कर सकते हैं। फिलहाल तो कांग्रेस में हर स्तर पर भ्रम व्याप्त है।

- पर, राहुल गांधी के लंदन में और खड़गे के कर्नाटक में होने के कारण, मुख्यालय में कोई गतिविधि नज़र नहीं आ रही। कमरे खाली हैं और बराण्डे भीड़ रहित।
- राजस्थान में पार्टी के कार्यकर्ता व नेता, पायलट-गहलोत समझौते की ''डीटेल्स'' जानने के लिये आतुर हैं, पर, हाई कमान आंख खोलकर बेसुध सी सो रही है।
- खड़गे ''एडहॉक अध्यक्ष'' जैसे लग रहे हैं, न उनकी टीम बनी है, न पदाधिकारी नियुक्त हुए हैं।
- पर, ए.आई.सी.सी. के दिग्गज बड़े पद पाने के लिये ''लॉबिंग'' कर रहे हैं।
- सुरजेवाला ए.आई.सी.सी. में महासचिव बनने की कोशिश में हैं, जिसके पास पार्टी के संगठन का चार्ज हो। दूसरी ओर वेणुगोपाल रक्षात्मक मुद्रा में हैं, क्योंकि हर तरफ से उन पर वार हो रहे हैं, उनका पद पाने के लिये, पर, उन्हें राहुल गांधी का प्रश्रय प्राप्त है।
- खड़गे भी महत्वपूर्ण पदों पर अपने वफादारों को नियुक्त करना चाहते हैं, पर, वे जानते हैं कि, यह तभी संभव है, जब गांधी परिवार से हरी झंडी मिलेगी।

'जब व्यापारिक ''गुड्स'' सीमा ''क्रॉस'' नहीं करते तो, सैनिक सीमा ''क्रॉस'' करेंगे'

यह पुराना सिद्धांत पूरी तरह से पाकिस्तान पर लागू होता है

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 13 जून। पाकिस्तान सरकार मुश्किल परिस्थितियों में भी सबक लेने से इनकार करती है। पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था बहुत खराब स्थिति में है। विदेशी मुद्रा भंडार बिल्कुल तली में पहुँच गया है, खाद्यान्न की जबरदस्त कमी है तथा महँगाई ने आम आदमी की कमर तोड़ दी है।

पाकिस्तान सामान्य अर्थशास्त्र तक को समझता प्रतीत नहीं हो रहा है। उसे यह समझ नहीं आ रहा कि दूरस्थ देशों से महँगा सामान आयात करने के बजाय, पड़ोसी देश भारत के साथ व्यापार करना उसे बहुत सस्ता पड़ेगा।

अच्छा अर्थशास्त्र ही अच्छी राजनीति हुआ करता है। यह बात पाक सरकार जितनी जल्दी महसूस कर लेगी तथा भारत के सीमा पार व्यापार को सुगम बनाने के कदम उठा लेगा, यह अर्थव्यवस्था तथा जनता के लिये उतना ही बेहतर रहेगा।

फिर भी, पाकिस्तान, भारत-विरोधी सोच को दशकों से अपने गले का हार बनाये हुये है तथा अपने पड़ोसी देश भारत के प्रति उसका शत्रुतापूर्ण रुख ही उसकी विदेश नीति को परिभाषित करता आ रहा है।

शत्रुता सदैव ही स्वयं की पोषक होती है। वस्तुतः लोगों और वस्तुओं का सीमा पार आना-जाना दोनों देशों के भू-राजनैतिक दुश्मनी की समाप्ति की ओर पहला कदम हो सकता है। जैसा कि 19वीं शताब्दी के मशहूर फ्रांसीसी अर्थशास्त्री फ्रेड्रिक बेस्टिअट ने कहा था, ''जब वस्तुएं सीमाओं को पार नहीं करती है, तब इस काम को सैनिक करते हैं।''

यह बता देना जरूरी है कि भारत और पाकिस्तान के बीच थोड़ी-बहुत मात्रा में तो व्यापार इस समय भी चल ही रहा हो, चाहे वह गैर कानूनी रूप से हो रहा हो या फिर अफगानिस्तान जैसे तीसरे देश के माध्यम से। वक्त आ गया है कि यह व्यापार सरकारी स्तर पर हो। व्यवसाय से जुड़े समझदार लोगों के स्वर यह कहते हुये सुनाई देने लगे हैं तथा इन स्वरों ने सरकार का ध्यान इस तथ्य की तरफ खीचंना भी शुरु कर दिया है कि भारत के साथ व्यापार पर प्रतिबंध लगाना नुकसानदेह है।

सीमा पर मौजूद तनावों, जो 2019 के पुलवामा हमले के बाद और भी बढ़ गये हैं, के परिणामस्वरूप निराशाजनक हो चुके व्यापारिक संबंधों को बहुत नुकसान पहुँचा है। अत्यधिक नजदीकी के बावजूद, व्यापार न होना अर्थशास्त्र के ''ग्रेविटी मॉडल'' के विपरीत है। ग्रेविटी मॉडल दूरी को व्यापारिक रिश्ते बनाने का एक प्रमुख कारक मानता है। अनौपचारिक माध्यमों से पाकिस्तान पहुँचने वाले सामानों में शामिल हैं- टमाटर जैसी सब्जियाँ, दवाएं, फार्मास्यूटीकल उत्पाद, रसायन, कपड़ा, टायर तथा मशीनरी। पाकिस्तान से बाहर जाने वाली चीजों में शामिल हैं- सूखे मेवा, दालें, खाद्य तेल, जूते-चप्पल, कपड़े तथा तंबाकू। इसलिए,

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- अब पाकिस्तान के व्यापारियों ने दबाव बनाना शुरू किया है, दोनों देशों के बीच व्यापार खोलने के लिये।

सुप्रीम कोर्ट ''पेपर लैस'' हो जाएगा 3 जुलाई से

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 13 जून। सुप्रीम कोर्ट 3 जुलाई से पेपर लैस होने जा रहा है, उसी दिन ग्रीष्मावकाश के बाद कोर्ट पुनः शुरु होने वाला है। सुप्रीम कोर्ट में आधुनिक तकनीकों का प्रयोग किया जाएगा। सुप्रीम कोर्ट के कुछ कोर्ट रूम में बिग स्क्रीन लगाई जाएगी, जहां वकील वीडियो कॉन्फ्रैंस के जरिए बात कर सकेंगे। वीडियो कॉन्फ्रैंस के लिए 120 इंच की स्क्रीन कोर्ट रूम में जजों के लिए लगेगी। जजों के लिए दस्तावेजों की भौतिक प्रति की जगह पॉपअप स्क्रीन ले लेगी। और कानून की किताबों की जगह डिजीटल लायब्रेरी लेगी। जज और वकील 3 जुलाई से कोर्ट परिसर में बदलाव देख सकेंगे। ये परिवर्तन कोर्ट संख्या 1, 2 एवं 3 में ये परिवर्तन किए जाएंगे। आधुनिक तकनीक धीरे-धीरे अदालतों में भी लागू की जाएगी।

- वीडियो कॉन्फ्रैंस के लिए कोर्ट रूम में बड़ी-बड़ी स्क्रीन लगाई जा रही हैं। कागजात की जगह पॉप अप स्क्रीन और कानून की किताबों की जगह डिजिटल लाइब्रेरी प्रयुक्त की जाएगी।

उत्तर व पश्चिम भारत में सीटें कम आने की आशंका है भाजपा को?

कर्नाटक की हार के बाद, इस आशंका से घिरी भाजपा ने तेलगुदेशम पार्टी से गठबंधन की तैयारी की

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 13 जून। इसे कर्नाटक ''इफैक्ट'' कहें या कुछ और दक्षिण भारत मे ंकदम जमाने की भाजपा की योजना के परिवर्तन का दौर चल रहा है तथा गठबंधन सहयोगी बदले जा रहे हैं, खासकर आंध्र प्रदेश में, जहाँ से लोकसभा के 25 सांसद चुने जाते हैं। तमिलनाडु की तरह आंध्र में भी भाजपा की मामूली सी उपस्थिति है, लेकिन पार्टी यहां अपने पुराने सहयोगी तेलुगुदेशम से नया गठबंधन करने की तैयारी में हैं, जो कि राज्य में पुनः जमने की कोशिश में हैं। पार्टी यहां लोकसभा, विधानसभा चुनाव हार चुकी है।

पूर्व में आंध्र प्रदेश में तेलुगुदेशम और भाजपा ने गठजोड़ किया था पर तेलुगुदेशम के प्रमुख एन. चंद्रबाबू नायडू ने 2019 में आम चुनाव से पहले गठबंधन तोड़ दिया था। चंद्रबाबू को पासवान की तरह राजनैतिक मौसम के अनुसार राह चुनने वाला नेता माना जाता है। उन्होंने तब हारने वाले घोड़े पर दांव खेला और हार गए।

भाजपा ने तब 300 से ज्यादा सीटें हासिल की और आंध्र प्रदेश में जीत मिली, कांग्रेस से अलग हुए गुट वाय.एस.आर.सी.पी. को, जो शानदार बहुमत के साथ सत्ता में आई और इसके 23 सांसदों ने संसद में मोदी सरकार को समर्थन दिया। यह भाजपा की मजबूत व विश्वस्त समर्थक बन गई। यहां तक इसके सांसदों को भाजपा का ही माना जाता था

इस बार भी समीकरणों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। लेकिन भाजपा की मजबूरी है कि वह दक्षिण भारत में अपनी सीटें बढ़ाना चाहती है ताकि उत्तर तथा पश्चिम भारत में होने वाले नुकसान

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- तेलगुदेशम पार्टी से भाजपा की पुरानी दोस्ती थी, पर, 2019 के चुनाव के पहले तेलगुदेशम पार्टी के नेता चन्द्रबाबू नायडू ने, हवा को गलत समझते हुए भाजपा से गठबंधन तोड़ कर विपक्ष के साथ संबंध स्थापित किये।
- पर, भाजपा को कोई फर्क नहीं पड़ा था, क्योंकि वाय.एस.आर. कांग्रेस पार्टी ने चुनाव में भारी विजय पायी तथा भाजपा को पूरा समर्थन दिया संसद में।
- परन्तु, अब दक्षिण भारत में पैर पसारने की दृष्टि से भाजपा ने आंध्र में तेलगुदेशम से हाथ मिलाया है।
- भाजपा के दोनों हाथों में लड्डू हैं, अगर तेलगुदेशम-भाजपा गठबंधन जीता तो, भाजपा को फायदा ही है, पर, अगर वाय.एस.आर. कांग्रेस जीती तो, वह पार्टी भाजपा के लिए पहले की भांति, संसद में संकट मोचन का काम करेगी ही।

आई.टी.आई. केन्द्र भवन में पैंथर घुसा

डूंगरपुर, 13 जून। चितरी दाहला के डामरीया फला में स्थित आई.टी.आई. केन्द्र भवन में पैंथर घुसने से हड़कम्प मच गया। जानकारी के अनुसार सोमवार शाम को आई.टी.आई. केंद्र के बाथरूम में पैंथर होने की पुष्टि पर गलियाकोट उपखंड अधिकारी को सूचना दी गई।

- सोमवार शाम पैंथर घुसने से एकदम अफरातफरी मच गई थी। मंगलवार सुबह उदयपुर से रैस्क्यू टीम पहुंची, पर इससे पहले ही पैंथर निकलकर भाग गया।

गलियाकोट उपखंड अधिकारी पंकज कुमार कलासुआ ने वन विभाग को तुरंत प्रभाव से मौके पर पहुंचने के निर्देश दिए। मौके पर ग्रामीणों की भारी भीड़ जमा हो गई। सूचना पर चितरी थानाधिकारी गोविंद सिंह भी मय जाप्ते पहुंचे। इधर वन

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

ट्विटर के पुराने कर्ता धर्ता डोरसी ने भारत सरकार पर धमकी देने का आरोप लगाया

डोरसी के अनुसार, भारत सरकार ने किसान आंदोलन के दौरान भारी दबाव बनाया कि, उन पत्रकारों की टिप्पणियाँ ब्लॉक की जायें, जो किसान आंदोलन में सरकार की नीतियों व निर्णयों की कड़ी आलोचना कर रहे थे

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 13 जून। ट्विटर के पूर्व बॉस जैक डोरसी के एक आरोप से देश में एक राजनैतिक तूफान आ गया है। डोरसी ने आरोप लगाया है कि भारत ने 2020-21 के किसान आंदोलन के दौरान इस माइक्रोब्लॉगिंग वैबसाइट (ट्विटर) पर दबाव डालने की कोशिश की थी। लेकिन सरकार इस दावे को ''सफेद झूठ'' बताते हुये, सिरे से खारिज कर दिया है।

हमेशा हर बात से इंकार करने के लिए तैयार रहने वाले केन्द्रीय आई.टी. मंत्री राजीव चन्द्रशेखर ने जैक डोरसी की इस टिप्पणी को उनके द्वारा बोला गया ''सफेद झूठ'' और ''ट्विटर के इतिहास के संदेहास्पद दौर'' को लिखने की कोशिश बताते हुये, उसे खारिज कर दिया है। आई.टी. मंत्री ने कल इन रिपोर्टों का भी खण्डन किया था कि सरकारी पोर्टल ''कोविन'' का डेटा हैक कर लिया गया है।

''कोविन'' की हैकिंग की मीडिया रिपोर्ट पर चन्द्रशेखर ने कहा था कि यह साइट हैक नहीं हुई है तथा सार्वजनिक क्षेत्र का डेटा तो पहले ही हैक हो गया था। ज्ञातव्य है कि ''कोविन'' में सभी भारतवासियों का स्वास्थ्य संबंधी डाटा, जिसमें उनके टेलीफोन नम्बर तथा आधार कार्ड नम्बर भी शामिल हैं, संगृहित रहता है।

- डोरसी ने यह भी कहा कि, सरकार ने उनसे कहा था कि, ''हम ट्विटर'' को हिन्दुस्तान में बंद करा देंगे। हम आपके कर्मचारियों के घरों पर छापे मारेंगे, अगर आपने हमारी बात नहीं मानी।
- सूचना प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर व आई.टी. विभाग के राज्य मंत्री राजीव चन्द्रशेखर ने डोरसी के आरोपों का पूर्णतः खण्डन किया और कहा, ट्विटर ने भारत के कानून-कायदों को मानने से साफ इंकार कर दिया था, उनका यह कृत्य भारत की सार्वभौमिकता को चुनौती देने वाला काम था, अतः भारत सरकार को उनके साथ सख्ती का व्यवहार करना पड़ा था।

सोमवार को यूट्यूब चैनल ''ब्रेकिंग पॉइन्ट्स विद क्रिस्टल एंड सागर'' पर एक इन्टरव्यू के दौरान, जैक डोरसी से पूछा गया था कि क्या उन्होंने विदेशी सरकारों की ओर से कभी किसी दबाव का सामना किया है।

उन्होंने जवाब दिया था, ''उदाहरणार्थ-भारत।'' भारत वह देश है जिसने किसान आंदोलन के संबंध में तथा कुछ खास पत्रकारों, जो सरकार के आलोचक थे, के संबंध में कई बार अनुरोध किया था। अपनी इस बात को भारत ने कई तरीकों से व्यक्त किया, जैसे-''हम भारत में ट्विटर बंद कर देंगे''.....''हम आपके कर्मचारियों के घरों पर छापे मारेंगे'', और ऐसा भारत ने किया भी था, ''अगर आपने हमारे आग्रह को नहीं माना तो हम आपके दफ्तर बंद करा देंगे''.... और यह है भारत, एक लोकतांत्रिक देश।''

जैक डोरसी, जिन्होंने 2021 में ट्विटर सी.ई.ओ. का पद छोड़ दिया था, ने टर्की और नाइजीरिया की सरकारों का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि इन देशों ने पिछले वर्षों में अलग-अलग बिन्दुओं पर अपने देशों में ट्विटर प्लेटफॉर्म पर प्रतिबंध लगा दिया था, जिसे बाद में हटा दिया गया था। उन्होंने कहा कि टर्की सरकार भी ''उसी तरह'' (भारत की तरह) पेश आई थी।

कई विपक्षी दलों ने इन टिप्पणियों को शेयर किया है तथा सरकार को निशाना बनाया है।

केन्द्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

तमिलनाडू के मंत्री की ई.डी. ने तलाशी ली

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 13 जून। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने तमिलनाडु के बिजली मंत्री टी.वी. सैंथिल बालाजी के ऑफिस पर तलाशी में ई.डी. के दुरुपयोग की कड़ी निंदा की।

एक बयान में उन्होंने कहा कि ये तरीके विपक्ष को चुप नहीं करा सकते हैं। उन्होंने कहा कि वे इस प्रकार मोदी सरकार की जन विरोधी नीतियों के खिलाफ लोकतांत्रिक संघर्ष जारी रखने के विपक्ष के संकल्प को और मजबूत कर रहे हैं।

खड़गे ने कहा कि मोदी सरकार के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने इसकी कड़ी आलोचना की और कहा, इससे विपक्ष के इरादे और मजबूत होंगे।